To,

Sri Dr. ..... Prakash Jain
Associate Professor,
....
Kayai ....

If not delivered, please return to:

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,

Thyagarayanagar, P.O., Madras - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास की ओर से सी.एन.वी. अण्णामलै द्वारा हिन्दी प्रचार प्रेस, मद्रास - 600 017 में मुद्रित एवं प्रकाशित।

Price

'मृगनयनी' उपन्यास की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचय

डॉ. शशिप्रभा जैन एवं श्रीमती के.वी. महालक्ष्मी

रूपरेखा :

1. संस्कृति की परिभाषा
2. हिन्दी उपन्यास और भारतीय संस्कृति
3. 'मृगनयनी' उपन्यास की कथावस्तु
4. 'मृगनयनी' का सांस्कृतिक परिवेश
5. 'मृगनयनी' की प्रासंगिकता
6. उपसंहार

संस्कृति की परिभाषा :

संस्कृति शब्द को परिभाषित करना बड़ा जटिल है। क्योंकि, संस्कृति का कोई रूप या आकार नहीं होता। संस्कृति एक अवधारणा मात्र है। वह एक अन्तःप्रक्रिया है, जो किसी समाज में निरन्तर प्रवाहित रहती है। यह प्रवाह सर्वत्र एक-सा नहीं रहता। उसकी भिन्नता मानव समुदाय को एक विशिष्ट पहचान देती है। इतना सब होते हुए भी विद्वानों ने संस्कृति शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है।

1. "संस्कृति कला एवं उपकरणों में व्यक्त संस्कारगत ज्ञान का वह संगठित रूप है, जो परम्परा में रक्षित होकर मानव समूह की विशेषता बन जाता है।" – रेडफील्ड
2. "संस्कृति वह जटिल तत्व है, जिसमें ज्ञान, नीति, कानून, रीति-रिवाज तथा दूसरी उन योग्यताओं और आदतों का समावेश है जिन्हें मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते प्राप्त करता है।" – नर विज्ञानी टायलर
3. "मानव संस्कृति मानव से बड़े किसी विचार या आदर्श की सतत् सृष्टि है।" – श्री अज्ञेय
4. "मनुष्य के भीतरी विकास और उसकी नैतिक उन्नति से जोड़ते हुए, एक-दूसरे के साथ सद्व्यवहार और एक-दूसरे को समझने की शक्ति है।" – पंडित जवाहरलाल नेहरू

हिन्दी उपन्यास और भारतीय :

हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यास सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व नहीं रखते। श्रद्धाराम फुल्लोरी कृत 'भाग्यवती' और 'परीक्षा गुरु', बालकृष्ण भट्ट कृत 'रहस्य कथा' (1879), 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886) और 'सौ अजान एक सुजान' (1892), रामकृष्णदास कृत 'निस्सहाय हिन्दू' (1890), लज्जाराम शर्मा कृत 'धूर्त रसिक लाला' (1890) और 'स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी' (1899) तथा किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'त्रिवेणी या सौभाग्यश्री' (1890) विशेष महत्व रखते हैं। इन सभी उपन्यासों का लक्ष्य समाज की कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना और आदर्श परिवार एवं समाज की रचना का संदेश देना है। इन उपन्यासों में हमारे पारिवारिक आदर्श, भारतीय नारी के पतिव्रत मातृत्व और गृहलक्ष्मी रूप को विशिष्ट गरिमा दी गयी है, इस दृष्टि से इनका सांस्कृतिक महत्व बढ़ जाता है।

द्विवेदी युग में अधिक सार्थक रचनाएँ सामने आयी हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से इस युग के उपन्यास 'अधखिला फूल', लज्जाराम शर्मा का 'आदर्श दम्पती' (1904), किशोरीलाल गोस्वामी का 'लीलावती वा आदर्श सती' (1901), गंगाप्रसाद गुप्त का 'हम्मीर' (1903), जयराम का 'काश्मीर पतन' (1907) इस काल में कुछ चर्चित उपन्यास हैं, जिनके माध्यम से हमारे शौर्य, साहस, पराक्रम, न्यायप्रियता, औदार्य, भारतीय नारी के आदर्श, विवाह के संबंध में भारतीय मान्यताओं और पति-पत्नी के बीच रिश्तों के पारम्परिक रूप को कथा का केन्द्र बनाया है।

छायावादी युग हिन्दी साहित्य में रचनाओं की प्रौढ़ता का युग है। जयशंकर प्रसाद अपनी कृति 'तितली' में तितली के माध्यम से वैदिक संस्कृति की पुनस्थापना का प्रयास किया है। 'कंकाल' में जर्जर होती हमारी धार्मिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है। प्रेमचंद कृत 'रंगभूमि' में सूरदास के माध्यम से हमारे ग्रामीण समाज की भूमि से जुड़े रहने की भावना, 'निर्मला' में लड़कियों की वैवाहिक समस्या, 'गबन' में भारतीय नारी की आभूषण प्रियता आदि को प्रकट किया गया है। भारतीय नारी के मानसिक परिवर्तन की धारा को भी इन कथाओं में देखा जा सकता है। इनमें द्वन्द्वात्मक स्थिति की प्रधानता होने से सांस्कृतिक पक्ष पीछे छूट गया है।

छायावादोत्तर काल उपन्यासों की दृष्टि से विविधता लिये हुए है। आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का बहुचर्चित उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा" में हमारी वैदिक, बौद्ध और शाक्त परंपराओं की आराधना पद्धति पर विस्तार से विचार किया गया है। इसका पर्याप्त सांस्कृतिक महत्व है। वृंदावनलाल वर्मा कृत 'मृगनयनी' (पंद्रहवीं शताब्दी) 'माधवजी सिन्धिया' (पेशवा युग) और 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' (1857 की क्रांति) विशेष महत्वपूर्ण हैं।

आधुनिक उपन्यास साहित्य, युगीन - अन्तर्द्वन्द्वों और जिजीविषाओं के बीच जूझती मानवीय भावनाओं के परिणाम हैं, इसलिए उनमें मानवीय कुण्ठाएँ, अर्न्तद्वन्द्व संबंधों की टकराहट जैसे तथ्य इनमें अधिक हैं। आधुनिक बोध की जडता इनमें संस्कृति बोध को धुंधला कर देती है। फिर भी इतिहास को लेकर छुटपुट प्रयत्न चलते रहते हैं। इसीलिए हिन्दी उपन्यासों का संबंध सांस्कृतिक धरातल पर आज भी बना हुआ है।

'मृगनयनी' उपन्यास की कथावस्तु :

इस उपन्यास की कथावस्तु 15वीं शताब्दी के अंत एवं 16वीं शताब्दी के आरंभ से संबंधित है। उस समय दिल्ली के सिंहासन पर बहलोल लोदी और उसके बाद उसका उत्तराधिकारी सिकन्दर लोदी बैठे, जिनके आक्रमण ग्वालियर राज्य पर होते रहे। उस समय ग्वालियर का शासक मानसिंह तोमर था। उसी के राज्य में ग्वालियर के निकट राई नामक गाँव में गूजर परिवार की लड़की 'निन्नी' अपने भाई अटल के साथ रहती थी। अकाल पीडित लाखी भी माँ की मृत्यु के बाद अटल के प्रेम में बँधकर उसके घर में रहने आ गयी थी। उन दोनों के रूप-लावण्य, शिकार, वीरत्व एवं साहस के

समाचार मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन और गुजरात के सुल्तान तक पहुँचे। मालवा के सुल्तान ने नटों के माध्यम से इन सुंदरियों को पाने के प्रयत्न किये जो कि असफल रहे। अंत में राजा मानसिंह बोधन पुजारी के निमंत्रण पर शिकार खेलने राई गाँव पधारे। निन्नी के रूप-लावण्य एवं शिकार में प्रकट की गयी उसकी वीरता पर मुग्ध होकर, उन्होंने उससे विवाह कर लिया और उसे ले ग्वालियर पहुँचे। वहाँ 'मृगनयनी' ने अपने गुणों के कारण मानसिंह के हृदय में उसकी आठ रानियों से ऊपर अपना स्थान बना लिया। गाँव में अटल और लाखी का विवाह अहीर और गूजर दो भिन्न जाति के होने के कारण नहीं हो सका। बोधन पुजारी और गाँव वालों के बहिष्कार के फलस्वरूप उन्हें गाँव छोड़कर नटों के साथ मगरौनी होते हुए नखर जाना पड़ा। नटों ने नखर में गयासुद्दीन को हरा दिया और लाखी को फुसलाकर उसके पास ले जाने की चेष्टा की, पर वे सफ़ल नहीं हो सके। मानसिंह ने नखर में गयासुद्दीन को हरा दिया और लाखी की वीरता के पुरस्कार स्वरूप नखर की ज़ागीर अटल को दे दी। लाखी और अटल का विधिवत् विवाह ग्वालियर आने पर हुआ।

मानसिंह ने राई में एक गढ़ी बनवाकर वह गढ़ी, राई गाँव और नागदा की ज़ागीर भी अटल को प्रदान की। सिकन्दर लोदी के आक्रमण पर उसका सामना और गढ़ी की रक्षा करते अटल और लाखी ने वीरगति पायी। सिकन्दर लोदी की हार हुई, पर अगले आक्रमण में उसने ग्वालियर पर घेरा डाला और नखर को जीत लिया। नखर को ध्वंस करने के पश्चात् उसने उसे चंदेरी के शासक राजसिंह को दे दिया। अंत में घेरा उठाकर उसे दिल्ली लौटना पड़ा जहाँ उसकी मृत्यु हो गयी।

राजा मानसिंह, सिकंदर लोदी का घेरा उठने के बाद पुनः राज्य के पुनर्गठन में लग गया। इस कार्य में मृगनयनी प्रेरणा का स्रोत सहयोगिनी थी। उसने अपने पुत्र राजे और बाले के बजाय राज्य के हित में, सुमन मोहिनी के पुत्र विक्रमादित्य को ग्वालियर राज्य का युवराज, उत्तराधिकारी बनवाया। मानसिंह के जीवन में कला और कर्त्तव्य का समन्वय और संकलन बनाए रखने में वह सदैव प्रत्यनशील रही। कथा की परिसमाप्ति इसी रूप में होती है।

'मृगनयनी' का सांस्कृतिक परिवेश :

'मृगनयनी' की कथा ग्वालियर के तोमर वंशीय शासक मानसिंह से संबंधित है। मानसिंह तोमर का शासनकाल 1486 से 1516 तक माना जाता है। इस युग की आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल के साथ ही भारतीय सांस्कृतिक तत्व का चित्रण कथा में मिलता है। इन सांस्कृतिक तत्वों का निर्वाह राजा मानसिंह, रानी मृगनयनी, लाखीरानी, अटलसिंह, निहालसिंह, कला, विजयजंगम, वैजूबावरा आदि पात्रों द्वारा मिला गया है।

उपन्यास के कथानक का प्रारंभ ही राजा मानसिंह के द्वारा किये गये जनहित कार्यों से होता है। राजा मानसिंह अपने शौर्य, साहस, न्याय, कलाप्रियता और प्रजावत्सलता के कारण बड़े लोकप्रिय शासक थे। उनकी बुद्धि तर्क सम्मत निर्णय लेने में सदैव सजग दिखाई देती है। वह कलाओं का श्रेष्ठ ज्ञाता ही नहीं, कला का पुजारी भी है। कलाओं को राज्याश्रय प्राप्त

होने से कलाएँ हमारे देश में बहुत ही विस्तार से फैली और पनपी है। कलाएँ संस्कृति की रक्षा में विशेष सहायक रही हैं। प्रजा के दुख-सुखी की सच्ची जानकारी पाने के लिए हमारे राजा वेश बदलकर नगर व ग्रामों में भ्रमण करते रहे हैं। राजा मानसिंह भी रात्रि में वेश बदलकर नगर भ्रमण करते हैं। उन्होंने कोढ़ियों, अपाहिजों, साधु और वैरागियों के लिए सदाव्रत खोल रखे थे ताकि उनके राज्य में कोई भूखा न रहे। इस प्रकार वे भारतीय राजा के उस सच्चे स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें राजा प्रजा का रक्षक होता है। इन्हीं गुणों के कारण भारतीय जनता अपने राजाओं की पूजा तक करती आयी है। राजा हमारा सांस्कृतिक आदर्श है।

हमारे सांस्कृतिक जीवन का एक अंग, हमारी कलाएँ भी होती हैं। इनसे हमारी अनुभूतियाँ, हमारी भावनाएँ मूर्त रूप धारण कर हमारे समझने-सोचने की शक्ति को प्रकट करती हैं। मानसिंह के समय स्थापत्य और संगीत ने विशेष उन्नति की। राजा मानसिंह देह, मन और बुद्धि तीनों से सुंदर हैं। उनका शारीरिक सौन्दर्य उनकी प्रजा को सहज अपने में बाँध लेता है और इस प्रकार हमारे आदर्श, सत्यं, शिवं और सुंदरं का निर्वाह सहज ही लेखक कर जाता है। वह आदर्श प्रेमी है, इसलिए भारतीय परंपरा के अनुसार वह मृगनयनी से काँपते स्वर में हिचकते हुए प्रार्थना भर करता है, "सुंदरी मृगनयनी, साहस नहीं होता, संकोच लगता है, परंतु कहे बिना नहीं रह जाता। क्या तुमको ब्याह में पा सकता हूँ? अपनी जन्म संगिनी बना सकता हूँ।" (मृगनयनी, श्री वृंदावनलाल वर्मा, पृ. 182) जो स्वयं समर्थवान् है वह इस तरह याचना करे यह हमारे भारतीय आदर्श ही तो है, अन्यथा इस युग में तो किसी भी सुंदरी को हरम में डाल लेना एक सामान्य परंपरा थी।

कथा का मुख्य आधार रानी मृगनयनी है। वह बुद्धिमान और निस्पृह इतनी है कि नटों की नायकिन द्वारा दिये गये विविध प्रलोभनों को ठुकरा देती है और गृह कलह को रोकने के लिए अपने पुत्र राजसिंह और बालसिंह को स्वयं उत्तराधिकार से वंचित कर सुमनमोहिनी के पुत्र विक्रमादित्यसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी नियुक्त करती है। उसका यह त्याग भारतीय नारी के आदर्श का गौरव है। भारतीय वीर नारियों की तरह वह लगातार अपने स्वयं के और पति के कर्त्तव्यों की ओर से सजग रहती है। तुर्कों के आक्रमण के अवसर पर वह स्वयं भी किले की रक्षा का भार लेने को तत्पर है परन्तु पति, कुल मर्यादाओं का पालन भारतीय रमणी चरित्र का लावण्य रहा है। अतः वह भी इसी डोर से बँधी आदर्श का पालन करती है। भारतीय नारी का संयम उसे यौवन में भी प्रेमोन्मत्य नहीं बनाता। वह मानसिंह को भी इस ओर से सचेत करती है- "मैं चाहती हूँ आपका शरीर, उत्साह, यश और सूरमापन दिन दूना दृढ और चमत्कार से भरा हुआ बना रहे। जिस राजा में ये गुण न हों उसका राज आजकल दो महीने भी नहीं टिक सकता। नियम और संयम के साथ रहिए और मुझको रहने दीजिए। मैं चाहती हूँ कि उन गुणों के साथ मेरी देह में भी वही बल बना रहे जिसको राई से लेकर

आयी हूँ।" (मृगनयनी, श्री वृंदावनलाल वर्मा, पृ. 321)

नारी पात्रों में दूसरा महत्वपूर्ण पात्र राई गाँव की लाखी है। पिल्ली द्वारा षड्यंत्र के विस्फोट पर कि वास्तव में वह मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन की ओर से, उसे व निन्नी (मृगनयनी) को उस तक ले जानेवाली कूटनी है, वह नखर के गढ़ के चारों ओर से घिरे होने पर भी उसके षड्यंत्र को ही विफल नहीं बनाती वरन् अपने सतीत्व की भी रक्षा कर लेती है। भारतीय जन का स्वाभिमान उसे दुर्दिन में भी मानसिंह के पास जाने से रोकता है। अंत में वह अपने त्याग और शौर्य का अपूर्ण उदाहरण देती हुई, उपन्यास के पाठकों पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती है। राई गढ़ी की रक्षा में मरते-मरते यह पतिपरायणा नारी अपने पति अटल से कहती है- "ब्याह कर लेना। अपनी जात-पाँत में.....।" (मृगनयनी, श्री वृंदावनलाल वर्मा, पृ. 230-31) अपने संक्षिप्त चरित्र में भी यह नारी पात्र पाठकों को सर्वाधिक प्रभावित करता है। राज्य के प्रति उसका प्रेम, त्याग, उसकी वीरता, उसका स्वाभिमान, पवित्र प्रेम और पति प्रेम सभी भारतीय सांस्कृतिक तत्व उसे इस दृष्टि से प्रतिनिधि चरित्र बना देते हैं।

हमारी संस्कृति में आश्रयदाता कभी आश्रित का सहारा नहीं लेता। अटल भी अनाज की कमी हो जाने पर लाखी के रखे हुए अनाज को खाने में संकोच करता है। वह अपने प्रेम की पवित्रता बनाए रखकर भी जब सामाजिक विवाह परम्परा द्वारा लाखी को पाने में असमर्थ रह जाता है तब मन की समस्त पवित्रता से हाथ में जल लेकर उसकी सौगन्ध खाते हुए ईश्वर को साक्षी करके यह कहता है- "हे भगवान! मैं कुँआरा हूँ और लाखी कुँआरी है। मैं, गंगाजी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यह जन्म भर मेरी होकर रहेगी।" (मृगनयनी, श्री वृंदावनलाल वर्मा, पृ. 119) हमारी संस्कृति में गंगा देवत्व का प्रतीक है। उसकी सौगन्ध वचन की दृढता का प्रतीक है, सामाजिक आश्रय न मिलने पर साधनहीन अटल इसी का सहारा लेता है। पिल्ली के समस्त बहकावे-प्रलोभन उसे अपने प्रेम से विचलित नहीं करते। लाखी की मृत्यु पर दुखी होकर, राई का यह अक्खड, निर्लेप, युवा जौहर मृत्यु का वरण करता है। पुरुष पात्रों में निहालसिंह का चरित्र भी ऐसा है जो अपने निर्भीक, निर्लेप शौर्य से भारतीय वीर परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

हमारा दर्शन हमें मृत्यु के प्रति निर्भीक बनाता आया है। भारतीय, मृत्यु का वरण दूल्हे की तरह करते हैं। मृत्यु उनका पुनर्विवाह है। यह निर्भीकता हमें निहालसिंह, अटलसिंह, बोधनपुजारी, विजयजंगम, मानसिंह और मृगनयनी सभी में दिखाई देती है। इस प्रकार मृत्यु में भी अविजित रहनेवाला भारतीय शौर्य वर्माजी के इस उपन्यास में बड़े सुंदर रूप में सामने आया है। उपन्यास के कलेवर में लिपटे ये सांस्कृतिक तत्व विशेष प्रयास के बिना ही अपनी सांस्कृतिक गुणों की व्याख्या कर गये हैं।

'मृगनयनी' की प्रासंगिकता :

मृगनयनी की कथानक चाहे रानी मृगनयनी और राजा मानसिंह के जीवन को अंकित करने के उद्देश्य से स्वीकार की गयी हो; किन्तु उसमें

एक ओर सामंतवादी संरक्षण में विकसित होती हुई कला-संगीत, स्थापत्य, नृत्य और काव्य आदि का वर्णन करके सामंतवाद का समर्थन किया गया है तो दूसरी ओर समाज के सामान्य हितों को ठेस पहुँचानेवाली सामंतवादी प्रवृत्तियों पर सिर धुना गया है। मृगनयनी का कथाकार जहाँ एक ओर केन्द्रीय सभा का विरोध करती छोटी-छोटी सामंती ताकतों की यश गाथा सुनाते नहीं थकता, वहीं दूसरी ओर चरितनायक के विरुद्ध संघर्षशील सामंती शक्तियों को अपने विरुद्ध खड़ा कर लेता है। स्वतंत्र भारत में लिखे गये इस उपन्यास में भी उपन्यासकार का देशप्रेम चरितनायक की राज्य सीमाओं तक सीमित हो गया है। यदि वह चाहता तो अपने दृष्टिकोण में औपन्यासिक कौशलों के प्रयोग द्वारा सीमा-विस्तार कर सकता था। इतिहास के प्रति ईमानदारी बरतने वाले उपन्याकार ने तत्कालीन दृष्टिकोण को उसकी सीमाओं के साथ प्रस्तुत करना समीचीन समझा है।

मृगनयनी में ज़िस वीरता को मुख्य उपजीव्य बनाया गया है वह आज़ादी की लड़ाई से उत्पन्न हुई वह सामूहिक भावना है जो भारतीयों को अंग्रेज़ों की गोलियों का मुकाबला करने के लिए निरन्तर अग्रसर करती रही। इसी से प्रेरणा प्राप्त कर देश के नौजवान फाँसी के तख्तों पर हँसते-हँसते झूल गये। यह जुनून सामाजिक कल्याण के लिए आत्मसमर्पण तक सीमित था। उसके समक्ष कोई भावी नक्शा नहीं था। इसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि इस रचना के द्वारा जाने-अनजाने सामंतवादी जीवन-मूल्यों का समर्थन हुआ है।

उपसंहार :

'मृगनयनी' का महत्व उसमें निहित सजीव युग-चित्रण, प्रेरक पात्रों के प्रतिष्ठान, सांस्कृतिक एवं लोकतत्वों तथा स्फूर्तिमय जीवनांकन पर निर्भर है। वर्माजी भारतीय संस्कृति के अनुरागी आस्थावान कलाकार हैं। उनका दृष्टिकोण सतर्क और सन्तुलित है। अतीत उन्हें उत्तेजित नहीं करता, वरन् गंभीर चिन्तन की प्रेरणा देकर वर्तमान में उनका मार्ग-निर्देश करता है। यह तथ्य 'मृगनयनी' में भली-भाँति दृष्टव्य है।

Associate Proferssor, अविनाशिलिंगम डीम्ड विश्वविद्यालय, कोवै-43.
Assistant Proferssor, श्री नेहरू महाविद्यालय, मलुमाच्चमपट्टी, कोयम्बत्तूर-641021.

दुर्भिक्ष के कारण

अंग्रेज़ी के धुरंधर साहित्य चेस्टरटन शरीर से काफ़ी मोटे-ताज़े थे। एक बार क्षीणकाय शॉ से उन्होंने मज़ाक में कहा "मिस्टर शॉ, विदेश में आपको देखकर लोग यह सोचेंगे कि इंग्लैंड में दुर्भिक्ष पड़ा है।" विनोदी शॉ ने तुरंत उत्तर दिया "और आपको देखते ही वे जान जाएँगे कि दुर्भिक्ष का कारण क्या है।